Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, Oct-2015, ISSN 2230-7540

वर्तमान समय में नेहरू की प्रासंगिकता

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

वर्तमान समय में नेहरू की प्रासंगिकता

Dr. Vishavjeet Singh

Assistant Professor, Political Science, D.A.V. College, Pundri, Kaithal

सारांश – जवाहरलाल नेहरू एक बहुमुखी व्यक्तित्व, देशभक्त, दार्शनिक इतिहासकार, राजनायिक, कानूनविद और आखिर में आधुनिक भारत के शिल्पकार परन्तु एक सर्वश्रेष्ठ स्वप्नदृष्टा के रूप में जाने जाते रहेंगे। उनकी लेखनी में भारत के दूरगामी विकास के बीज है। देश के बुनियादी ढांचे ने उसी से आकार लिया है। अवसान की आधी सदी के बाद नेहरू जी की प्रासंगिकता फिर चर्चा में है। क्योंकि उन्हीं की बनाई आर्थिक नीतियों व आर्थिक संस्थाओं के ढांचे ने देश को 2008 में आई वैश्विक मंदी की आंच उस प्रकार महसूस नही होने दी जैसे विश्व के अन्य देशों ने झेली। आज भारत उन्हीं की बनाई एटनी नीति के बलबूते पर विश्व में एक एटमी ताकत के रूप में स्थापित हुआ है। महात्मा गांधी के साथ मिलकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए भारत को आजाद के मुकाम तक पहुंचाया। देश का पहला प्रधानमंत्री बनने के बाद दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप में आधुनिक भारत की नींव रखते हुए विश्व में एक अलग पहचान दिलाई। पं. नेहरू को भारतीय जनमानस एक राष्ट्रनिर्माता और युग दृष्टा के रूप में हमेशा याद रखेगा।

----------X----------

भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। जवाहर लाल नेहरू देश के उन महान नेताओं में से एक प्रमुख नेता रहे है जिन्होंने आजादी के संघर्ष के साथ–साथ देश के नव निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। मई 1905 में शिक्षा ग्रहण करने के लिए इंग्लैण्ड रवाना हो गए। 1912 में इन्होंने बैरिस्ट्रीर पास की ओर इंग्लैण्ड से भारत वापिस आ गए। इलाहाबाद में वकालत शुरू करके एक कानून वेता के रूप में कार्य आरम्भ कर दिया। 1916 में इनका विवाह कमला कौल से हुआ जो शादी के बाद कमला नेहरू बनी। 1918 में अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य बने। सन् 1921 में प्रिसं ऑफ वेल्स के आगमन के विरोध में पहली बार गिरफ्तार हुए। 1922 में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए गिरफ्तार किया गया।

महात्मा गांधी से निकटता

महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय जनता सत्याग्रह के मार्ग पर चलने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो चुकी थी। कानून विषयों को लेकर पं. मोतीलाल नेहरू और गांधी जी के बीच मधुर सम्बन्ध बन गए थे। जब गांधी जी ने पं. मोतीलाल नेहरू को सत्याग्रह की पद्धति अपनाने और स्वराज्य प्राप्त करने के बारे में बताया तो पं. जवाहरलाल नेहरू को अंधेरे के बीच में रोशनी की एक किरण जान पड़ी। वह गांधी जी और सत्याग्रह के निकट आ गए। अब पिता और पुत्र दोनों स्वराज्य की लड़ाई में कूद चुके थे।[1]

पं. नेहरू राजनीति में क्यों और कैसे आए

कई व्यक्ति जन्मजात महान होते है और बहुत से व्यक्तियों को परिस्थितियों ने महान बनाया है। जिस परिवार का राजनीति से कोई लेना–देना न हो, जिसकी वकालत करोड़ो की हो, जो परिवार पूर्णतया अंग्रेजियत में रंगा हो वह परिवार एक दिन विश्व राजनीति में छा गए? जिस व्यक्ति के पिता मोतीलाल नेहरू विलासतापूर्ण जीवन जीने के आदी हो, मिस्र और तुर्की के सिगरेट जिनके होठों की हर समय शान बनकर रहते हो, जिस मोतीलाल नेहरू का आनंद भवन 42 आलीशान कमरों से युक्त हो, हेग डिम्पल स्कॉच जिसके डाइनिंग टेबल की शोभा हो। यूरोपियन खान–पान, चाल–ढाल में पूर्ण रूप से अंग्रेजियत में रंग गया हो वह देश की आजादी का अग्रणी कैसे बन गया?[2]

मई 1920 में पं. नेहरू के परिवार के सभी सदस्य गर्मियों के मौसम में मंसूरी चले गए। कुछ दिन बाद नेहरू अपनी बीमार पत्नी के साथ मंसूरी चले गए। नेहरू परिवार सेबी होटल में ठहर गया उसी होटल में एक अफगान परिवार भी रूका हुआ था। अफगान परिवार से पं. नेहरू की मुलाकात को अंग्रेजों ने एक षडयन्त्र समझकर पं. नेहरू की मुलाकात को अंग्रेजों ने एक षड़यन्त्र समझकर पं. नेहरू को बिना सोचे–समझे 24 घन्टे में मंसूरी छोडने के आदेश दे दिए । अंग्रेजी हकुमत के वफादार पं. नेहरू के परिवार को काफी धक्का लगा। जवाहरलाल नेहरू आदत हो गए और वह रास्ता बदलने पर मजबूर हो गए।[3]

1916 से 1919 की समयावधि में जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू अपने बेटे की महात्मा गांधी से नजदीकियों से दुखी थे। नेहरू परिवार में महात्मा गांधी एक विरोधी के रूप में जाने जाते थे। नेहरू की पूजनीय माता स्वरूप रानी नही चाहती थी कि उनका बेटा एक लंगोटी पहनने वाले, मरियल से गांधी की विचारधारा से प्रभावित हो। पर परिस्थितियों ऐसी बदली कि मार्च 1919 को महात्मा गांधी को इस नेहरू परिवार के आनन्द भवन में ठहराया गया। इन्दिरा जी तब साल भर की रही होगी। माता स्वरूप रानी ने नेहरू को गाधी से दूर रखने की भरपूर कोशिश की। परन्तु उतनी तीव्रता से जवाहरलाल नेहरू गांधी की तरफ झुकते चले गए। उन्हें आदर में 'बापू' कहने लगे। महात्मा गांधी के रंग में पं. जवाहर लाल नेहरू ऐसे रंगे कि

1. जवाहरलाल नेहरू, ''हिन्दुस्तान की समस्याएं'', सत्साहित्य मण्डल (अनु.) प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 14
2. वी.एन.छिब्बर, जवाहरलाल नेहरू ए मैन ऑफ लैटर्स, विकास पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड़, दिल्ली, 1970, पृ. 8
3. पं. जवाहरलाल नेहरू, ''हिन्दूस्तान की कहानी'', सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966, पृ. 55

www.ignited.in

पारिवारिक मसलों में भी गांधी जी की राय मानी जाने लगी। महात्मा गांधी और नेहरू एक दूसरे के पूरक बन गए। उन्हें जो लोकप्रियता मिली ऐसी लोकप्रियता विरले राजनेताओं को ही मिलती है।

स्वतन्त्रता आंदोलन में पं. नेहरू को 13 अप्रैल 1919 के जलियावाला बाग की घटना ने भाग लेने पर विवश कर दिया। जनरल डायर द्वारा की गई ऐसी बर्बर कार्यवाही का उदाहरण शायद ही विश्व में कोई दूसरा मिले। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 'रौलट एक्ट' जैसे काले कानून भारतीय जनता पर लागू कर दिए। उन्हें बिना वकील, बिना दलील जेलों डाला जाने लगा। 1923 में जेल से छूटने के बाद वह इलाहाबाद की राजनीति में सक्रिय हो गए। कुछ ही दिनों में उनको म्यूनिसिपैलिटी का चैयरमेन चुना गया।

हालांकि पं. जवाहरलाल नेहरू की महात्मा गांधी की नजदीकिया स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने का मुख्य कारण रही । लेकिन जवाहरलाल नेहरू के स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रेरणास्त्रोत इटली की आजादी की लड़ाई लड़ने वाले गैरीवाल्डी थे। महज 15 वर्ष की उम्र में पं. नेहरू ने 'गैरीवाल्डी और उनके साथी' नामक पुस्तक पढी और स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित हुए।[4] पं. जवाहरलाल नेहरू महात्मा गांधी के प्रिय उतराधिकारी थे। उन्हें भरोसा था कि बहुलता, अखंडता, उदारवादी मूल्य और परंम्पराके साथ वैज्ञानिक चेतना का सम्मिश्रण यदि हो सकता है तो वह नेहरू के व्यक्तित्व में ही सम्भव है। उन्होंने लम्बे समय तक देश का राजनीतिक नेतृत्व ही नहीं किया बल्कि हर मोर्चे पर भारतीय जनमानस का सांस्कृतिक चारित्रिक और नैतिक परिष्कार भी करते रहे। आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में वह एक सर्वमान्य नेता के रूप में स्वीकार किए जाते है।

वास्तव में बीसवीं शताब्दी में बहुत कम राजनेताओं ने नेहरू की स्थिति को प्राप्त किया है। भारत के संक्रमण के युग में पूर्व प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में नेहरू का मुकाबला रूजवेल्ट, चर्चिल, लेनिन तथा माओं के साथ किया जा सकता है। जो अपने साथियों में उंचे उठे और जिन्होंने राष्ट्रीय संकट के समय अपने लोगों का पथ प्रदर्शन किया। इसमें कोई संदेह नदी कि गांधी के सिवा और कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है जिसका लोगों पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा हो।[5] जितना कि स्वतन्त्रता के इस कर्णदार नेहरू का पड़ा है। बुद्धिजीव वर्ग को राष्ट्रीय आन्दोलन में लाने का श्रेय नेहरू को ही प्राप्त है, जबकि गांधी जी ने किसानों को इस आन्दोलन में अपने साथ मिलाया। हालांकि 1920 में प्रतापगढ़ के किसानों का मोर्चे गठित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। उनकी लोकप्रियता के बलबूते पर वे छ बार कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर लाहौर 1929 लखनऊ 1936, फैजपूर 1937, दिल्ली 1951, हैदराबाद 1953 और कल्याणी 1954 विराजमान हुए । उन्होंने आन्दोलन के समय नौ बार जेल यात्राएं की।

जवाहर लाल नेहरू ने प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए विदेश मंत्री के रूप में विदेश नीति की कमान सफलता पूर्वक संभाल कर रखी। नेहरू ने 'पंचशील' का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने तटस्थ राष्ट्रों को संगठित कर उनका नेतृत्व किया। उनसे प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मंडलो ने अपना 'हीरो' माना। हालांकि नेल्सन मंडेला के आन्दोलन चरित्र और उदारत को देखते हुए उनकी तुलना महात्मा गांधी से की जाती है। जेल में उनके साथ रहे रावेन आयरलैंड ने उनसे पूछा कि वे गांधी जी के प्रशंसक क्यो है। तो मंडलो का जवाब था कि 'मेरे हीरो तो जवाहरलाल नेहरू है। अपने जीवनीकार एंथोनी सैम्पसन को इसका कारण बताते हुए कहा, यदि कोई महाराजा नेहरू को रोके तो नेहरू उसे धक्का देकर आगे आगे बढ़ जाएंगे। हमें वे पसंद है, क्योंकि उनका व्यवहार बताता है कि हमें अपने दमनकारियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए। हम सनुते है। कि गांधी जी फौलादी संकल्प के व्यक्ति हैं, लेकिन उसे वे बहुत कोमलता से व्यक्त करते हैं। वे जवाब देने की बजाय विनम्रता से कष्ट सह लेंगे। 1940 के दशक में मंडेला ने नेहरू का व्यवस्थित अध्ययन किया। अपने भाषणों में वे नेहरू के जुमले, देयर इन नो इजी वॉक टू फ्रीडम एनीव्हेयर' का बहुत प्रयोग करते थे।

पांच गलतफहमियां पांच वास्तविकताएं

1. नेहरू जी ने राजनीति में वंशवाद को बढ़ावा दिया। जबकि सच्चाई यह है कि नेहरू का इसमें कोई लेना–देना नही है। यह तो इन्दिरा ही थी, जिन्होंने पहले संजय और बाद में राजीव गांधी को अपना उतराधिकारी बनाया।

2. गांधी जी ने उन्हें चुनकर गलती की और उन्होंने गांधी जी के साथ विश्वासघात किया। यह गलतफहमी गांधी जी के पोते राजमोहन गांधी ने अपनी किताब 'द गुड़ बोटमैन' में ध्वस्त कर दी।

3. पं. नेहरू की सरदार पटेल के साथ प्रतिदृढता थी जबकि दोनों एक दूसरे के गुणों को समझते थे।

4. यह गलतफहमी उपजी कि उनका कोई मित्र नहीं था और न ही वह अपना कोई उतराधिकारी बता पाए। लेकिन याद रखना होगा कि देश में लोकतंत्र को बढ़ावा उनसे ज्यादा किसी ने नहीं दिया।

5. अर्थव्यवस्था को अधिक खुला करने के हिमायतीयों ने यह भ्रम फैलाया कि उन्होंने देश पर स्टॉलिनवादी आर्थिक माडल थोपा है जबकि 1944 के बॉम्बे प्लान में सभी बड़े पूंजीपतियों व उद्योगपतियों के साथ मिश्रित अर्थव्यवस्था की पैरवी की थी।

महान व्यक्ति के जीवन की सबसे बडी भूल

नेहरू महान थे और महान व्यक्ति की भूलें भी महान होंगी। उनकी ऐतिहासिक भूल 'जम्मू कश्मीर' की सतत सताए रखने वाली भूल है। देश के पहले प्रधानमंत्री जम्मू–कश्मीर' की रियासत को भारत में सदैव–सदैव के लिए विलय करवाते वक्त सरदार पटेल के रास्ते में आ गए। वह शेख अब्दुल्ला को दोस्ती के धोखे में क्यों आ गए? हैदराबाद और जूनागढ़ के लिए यदि सरदार पटेल लौह पुरुष बन गए तो 'जम्मू–कश्मीर' रियासत के लिए नेहरू ने पटेल के हाथ क्यों रोक दिए? क्यों नेहरू जम्मू–कश्मीर' का मसला संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गए? क्यों कहा कि हम जनमत संग्रह करवाएंगे? यदि देश की अन्य रियासतों के लिए नही तो 'जम्मू–कश्मीर' में जनमत संग्रह क्यों? उनकी एक हिमालयन भूल भारत के लिए खतरा बन गई। फिर भी नेहरू के प्रति यह देश कृतज्ञ रहेगा। उनकी बताई पारस्परिक सह–अस्तित्व की भावना पर सारा विश्व पहरा दे। सभी देश

4. पं. जवाहरलाल नेहरू, ''मेरी कहानी'', सत्साहित्य मण्डल, प्रकाशन, नई दिल्ली, 1965, पृ. 427
5. आर.एस.यादव, ''इंटरनेशनल पीस एण्ड गांधीयन वर्ल्ड आर्डर'', दि इण्डियन जर्नल ऑफ पॉलिटिक्ल साइंस, वाल्यूम, स्टएप छवण 1 जनवरी–मार्च, 2005, पृ. 445

www.ignited.in

मिलकर 'पंचशील' के सिद्धांत का अनुसरण करे। 'जियो और जीने दो' को विश्व के सभी राजनेता अपना ध्येय बनाएं।